NAME = SONAM PANDEY

ROLL NO = 19044529002

PAPER NAME = Acting and Script writing

PAPER CODE = 12133901

YEAR = 2020

① अभिनय के चारो प्रकारो का वर्णन करे।

अभिमुख्य और अनुकूलता अर्थ वाले अभि- उपसर्ग पूर्वक 'णीञ्' प्रापणे (नमन) धातु से "एरच्" सूत्र द्वारा अच् प्रत्यय के विधान से अभिनय शब्द व्युत्पन्न है।

इसका व्युत्पत्तिपरक अर्थ है- "आभिमुख्य नमन" अर्थात सभी सामाजिको के सम्मुख (सामने) ले जाना। शाख, अंग और उपांग से युक्त प्रयोग के द्वारा बहुविध अर्थो को विभावित करने व निदर्शित करने से इसे अभिनय कहा जाता है।

अभिपूर्वस्य णीञ् धातुराभिमुख्यार्थनिर्णये।
यस्मात्प्रयोगं नयति तस्मादभिनयः स्मृतः॥

विभावयति यस्माच्च नानार्थान् हि प्रयोगतः।
शाखाङ्गोपाङ्गसंयुक्तस्तस्मादभिनयः स्मृतः॥

अभिनय चार प्रकार के होते है- सर्वप्रथम वाचिक अभिनय, द्वितीय सात्विक अभिनय एवम् तृतीय आहार्य अभिनय तथा चतुर्थ आङ्गिक अभिनय। इस प्रकार यह मुख्य चार अभिनय है।

(1) वाचिक अभिनय := नाट्य में वाणी के माध्यम से संवादो का कथन और काव्य की प्रस्तुति को वाचिक अभिनय कहते है। "वाचिक अभिनय" में रस और भावो के अनुरूप वाणी का अनुकरण किया जाता है। वाचिक अभिनय नाट्य का शरीर है।

आंगिक, सात्विक और आहार्य अभिनय वाक्यार्थ या वाचिक की ही अभिव्यंजना करते है। आंगिक, सात्विक आदि के अभिनय से मनोभावो की अभिव्यक्ति तो होती है, परन्तु पूर्णता और सार्थकता वाचिक अभिनय के समन्वय से ही प्राप्त होते है।

"वाचिक अभिनय" का दूसरा पक्ष है, रंगमंच पर नाट्य की प्रस्तुति। इसे पाठ्य शब्द से अभिहित किया गया है। यह नाटक का प्राण है। आचार्य भरतमुनि ने कहा है कि वाचिक को प्रभावपूर्ण बनाने के लिए पाठ्य के छः गुण "स्वर, स्थान, वर्ण, काकु, अलंकार और अंग" बताए गए है।

अभिनय के चारो प्रकारो मे वाचिक अभिनय मुख्य माना गया है। क्योंकि इसी के अंतर्गत अभिनेताओ (नट) तथा अभिनेत्री (नटी) एवम् अन्य मुख्य पात्रो के संवाद (डाइलॉग) आदि को बताया गया है, तथा उनका अपना कथोप-कथन किन-किन भाषाओ मे बोलना है यह भी इसी के अंतर्गत आता है।

(2) सात्विक अभिनय :- आचार्य भरत ने नाट्य-शास्त्र में कहा है कि आंगिक व्यक्ति द्वारा नाट्य में, सात्विक भावों के माध्यम से किया गया अभिनय सात्विक कहलाता है। सात्विक अभिनय पर ही नाट्य प्रतिष्ठित है। सात्विक अभिनय में सात्विक भावों का प्रकाशन होता है। जो सत्व मन: प्रभाव से उत्पन्न होता है। नाट्य में अश्रु, रोमांच, स्तम्भ आदि का अभिनय मन की एकाग्रता (सत्व) के बिना सम्भव नहीं है। यह मन की एकाग्रता से ही रूपायित हो पाता है।

सात्विक भाव आठ प्रकार का होता है - स्तम्भ, स्वेद, रोमांच, स्वरभङ्ग, वेपथु, वैवर्ण्य, अश्रु और प्रलय।
इन भावों के प्रदर्शन को ही सात्विक अभिनय कहा जाता है। ये सात्विक भाव मन से ही उत्पन्न होते हैं इसीलिये इन्हें सात्विक भाव कहा जाता है। नाटक में अन्य भावों के अनुरूप, रोमांच, कंप, स्वेद, अश्रुपात, स्वरभंग आदि का प्रदर्शन अंग-प्रत्यंग द्वारा किया जाता है, जो मन की एकाग्रता के अभाव में असम्भव है। क्योंकि नाट्य लोकधर्मी है, उसमें लोकचरित्रों का अनुकरण होता है इसलिए सत्व का प्रयोग नाट्य में विशेषतः अभीष्ट है।

सात्विक अभिनय भावों की अभिव्यक्ति को कहते हैं, अर्थात सात्विक अभिनय के अंतर्गत ही भावो की अभिव्यक्ति अर्थात भाव को व्यक्त किया जाता है।
जैसे - "मुख का रंग परिवर्तन करना" अर्थात कभी मुख का लाल पड़ना (गुस्से मे) कभी काला या नीला पड़ना (चोट मे तथा दर्द या पीड़ा मे) तथा कभी चेहरा का पीला या गुलाबी होना (प्यार मे)

आदि भाव व्यक्त होना ही सात्विक अभिनय के अंतर्गत आता है, जो अंगो के परिवर्तन के द्वारा किया जाता है।

सात्विक अभिनय के अन्तर्गत भाव और रस पर आश्रित अलंकार और पुरूषों के सात्विक गुणों को भी सम्मीलित किया जा सकता है। भरत ने **अंगज**, **स्वभावज** और **अयत्नज** अलंकार बताए हैं।

" अंगज और अयत्नज अलंकार पुरूष और स्त्री दोनों पात्रों मे होते हैं। स्वभावज अलंकार विशेष रूप से स्त्री पात्रों में होते हैं।

③ **<u>आहार्य अभिनय</u>** :- अभिनय का एक महत्वपूर्ण अंग आहार्य अभिनय है। अभिनय में पात्र का वेष-विन्यास, अलंकार-परिधान, अंग-रचना तथा रंगमंच पर निर्जीव लौकिक पदार्थों और सजीव जन्तुओं का नाट्यधर्मी प्रयोग आहार्य अभिनय कहलाता है। आहार्य अभिनय में पात्र, हार केयूरादि प्रसाधनों से सुसज्जित होकर नाट्य का प्रदर्शन करता है।

आहार्य अभिनय नेपथ्यजाविधि को कहते हैं। नेपथ्य में पात्र नाना प्रकृतियों नाना अवस्थाओं के अनुरूप वेशधारण और वर्ण-रचना करता है। अभिनवगुप्त के अनुसार आहार्य अभिनय नाट्य का ठीक उसी प्रकार आधार है, जिस प्रकार भित्ति चित्र-रचना का आधार है।

आंगिक, वाचिक और सात्विक अभिनय पात्र के शरीर से सम्बन्ध हैं परन्तु आहार्य अभिनय का सम्बन्ध बाह्य वस्तुओं के उपयोग से है, EXTERNAL ADDITION "आचार्य भरतमुनि" ने आहार्य अभिनय के चार विभाग किए हैं-

"पुस्त, अलंकार, अंगरचना और संजीव"

नाट्य शास्त्र मे भरतमुनि ने आहार्य अभिनय पर विशेष ध्यान दिया है। आहार्य अभिनय में साज-सज्जा, वेश-भूषा, सजावट के अन्य साधन आदि आते हैं। नाट्य गुरु भरतमुनि का कहना है कि नाटक के अंतर्गत किरदारों के वेश-भूषा, सजावट आदि पर विशेष ध्यान देना चाहिए। पात्रों को उनके किरदारों के अनुरूप ही साज-श्रृंगार, वस्त्र आदि धारण करना चाहिए। क्योंकि उसी के द्वारा वो अपना किरदार अदा करते हैं, तथा दर्शकों का ध्यान अपनी और आकर्षित कराते हैं, और उनका मनोरंजन कराते हैं।

(4) आङ्गिक अभिनय :-

आङ्गिक अभिनय के अंतर्गत अभिनेताओं के द्वारा हाथ-पैर, सिर, कमर, मुख आदि के द्वारा किया जाने वाला अभिनय, आङ्गिक अभिनय की श्रेणी मे आता है।

आङ्गिक अभिनय के तीन भेद हैं- शारीरिक, मुखगत, एवम् चेष्टाकृत।

इनके भी भेदोपभेदों से अभिनय का वैविध्य ज्ञात होता है। अगर हम इसे सरल और स्पष्ट अर्थ मे समझे तो- आंगिक अभिनय का अर्थ है- शरीर, मुख और चेष्टाओं से कोई भाव या अर्थ प्रकट करना।

सिर, हाथ, कटि, वक्ष, पार्श्व और चरण द्वारा किया जानेवाला या आंगिक अभिनय कहलाता है, और आँख, भौंह, अधर, कपोल और ठोढ़ी से किया हुआ मुखज अभिनय, व उपांग अभिनय कहलाता है।

"ये सभी प्रकार के अभिनय विशेष रस, भाव तथा संचारी भाव के अनुसार किए जाते है। इस प्रकार आंगिक अभिनय में 'तेरह प्रकार' का संयुक्त हस्त अभिनय, चौबीस प्रकार का असंयुक्त हस्त अभिनय, चौसठ प्रकार का नृत्त हस्त का अभिनय और चार प्रकार का हाथ के करण का अभिनय बताया गया है।

इस प्रकार नाट्यशास्त्र के रचयिता भरतमुनि ने ये अभिनय के चार प्रकार बताए है, तथा उनका विस्तृत वर्णन भी किया है। उनका कथन था कि अभिनय किसी अभिनेता या अभिनेत्री के द्वारा किये जाने वाला वह कार्य है, जिसके द्वारा वे किसी कथा को दर्शाते है, साधारणतया किसी पात्र के माध्यम से।

Harsha Kumari